ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2023; 9(11): 269-272
www.allresearchjournal.com
Received: 24-09-2023
Accepted: 30-10-2023

Dr. Lakshmi V
Assistant Professor,
Ramaiah College of Arts Science and Commerce,
Bangalore, Karnataka, India

Corresponding Author:
Dr. Lakshmi V
Assistant Professor,
Ramaiah College of Arts Science and Commerce,
Bangalore, Karnataka, India

विदुर नीतिः आधुनिक संदर्भ में

Dr. Lakshmi V

सारांश

हमारे पुराण और इतिहास ज्ञान के भंडार है। हजारों साल पहले ही मनुष्य के जीवन और उसकी सामाजिक व्यवहार के नुकीले अंश को उजागर करने का सक्षम प्रयास इन ग्रथो ने किया है। भगवत गीता आज भी हमारे जीवन के लिए मार्गदर्शी बने हुए हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में एक अविभाजनिय अंग इसका है। इसी तरह विदुर नीति भी राष्ट्रीय एवं व्यवहारिक जीवन के लिए प्रकाश डालने का काम करता है। इसके महत्व को उजागर करना इस आर्टिकल का उद्देश्य है।

कूटशब्दः विदुर नीति, सामाजिक व्यवहार, उद्योग पर्व

प्रस्तावना

उद्योग पर्व

महाभारत के 33 से 40 तक के श्लोक विदुर नीति या उद्योग पर्व के नाम से जाने जाते हैं। भारत के पुराण महाभारत संसार के सबसे उत्तम ग्रंधों में एक है,इसमें एक लाख श्लोक है जो ऋषि वेद व्यास द्वारा उच्चरित है।

विदुर नीति पुरातन राजनीति के उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है। एक संभाषण के रूप में अर्थात धृतराष्ट्र जो एक महाराज है अपने मन के प्रश्न पूछते हैं और विदुर उनके उत्तर अपनी बुद्धिमत्ता एवं बौद्धिक एवं आध्यात्मिक चिंतन के द्वारा देते हैं।

धृतराष्ट्र शारीरिक और मानसिक रूप से अंधे थे। शारीरिक रूप से उनकी अंधता एक अयोग्यता नहीं थी लेकिन मानसिक रूप से अर्थात अत्यंत पुत्र प्रेम द्वारा जो उनकी मानसिक अंधता हो गई थी यही कारण है महाभारत युद्ध का।

विदुर भले ही एक दासी के पुत्र थे लेकिन उनके अच्छे कर्मों के फल से वह कर्म योगी के रूप में जाने जाते हैं। विदुर अपने जन्म और स्थिति के प्रति पूरी तरह सचेत थे।

इसीलिए अपने आप को भी राजनीति के मामलों से कुछ अलग ही रखते थे। विदुर नीति को जानने से पहले इसकी पृष्ठभूमि के बारे में जानना जरूरी है। कौरवों के निरंतर बुरे बर्ताव के बाद भी पांडव उनके प्रति युद्ध का आह्वान नहीं करना चाहते हैं। इसीलिए वे अपने जन्म सिद्ध अधिकार की स्थापना के लिए पहले विराट राजा के पंडित को और बाद में श्री कृष्ण को आधे राज्य का प्रस्ताव देकर दूत के रूप में भेजते हैं। लेकिन जब उनके संधि का प्रस्ताव दुर्योधन द्वारा ठुकराया जाता है तो अब उनके पास युद्ध के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा था इसीलिए श्री कृष्ण युद्ध का प्रस्ताव लेकर जाते हैं। कहते हैं कि अगर पांडवों को आधा राज्य नहीं दिया गया तो युद्ध ही अंतिम निर्णय है इसके साथ-साथ वह युद्ध के दुष्परिणाम पर भी प्रकाश डालते हैं। उसी रात धृतराष्ट्र विदुर को अपने पास बुलाते हैं। विदुर और धृतराष्ट्र के बीच का संभाषण ही विदुर नीति है।

इस आर्टिकल के द्वारा मेरा प्रयास यही रहा है कि विदुर नीति के कुछ अंश को जिसमें मनुष्य के चरित्र एवं जीवन संबंधी विषय है उस पर प्रकाश डालना। आधुनिक काल में जिसका बहुत तेजी से ह्रास हो रहा है तो वह है लोगों की नियत। हर कोई धृतराष्ट्र एवं दुर्योधन के जैसे स्वार्थी होते जा रहे हैं मनुष्यों के बीच में ही नहीं राज्यों के बीच में काफी संबंध इसी तरह असमानता में चल रहा है जिसका नतीजा एक दूसरा महाभारत युद्ध हो सकता है।

छठा अध्याय के 32 श्लोक में इस तरह धृतराष्ट्र कहते हैं कि इस जन्म में मनुष्य को जो जय और पराजय मिलता है वह उसके पूर्व जन्मों का फल है इसमें उसका अपना कुछ नहीं है। धृतराष्ट्र का यह मानना था कि वह जो भी कर रहा है वह गलत नहीं है। राज्य की जीवन और भोग विलास उसके पूर्व जन्मों के फल के रूप में उसे मिला है। इस पर विदुर कहते हैं कि स्थान समय एवं परिस्थितियों को मन में रखकर ही किसी को भी बर्ताव करना चाहिए तभी एक अच्छा उपदेश भी गलत साबित हो सकता है अगर वह गलत समय पर दिया गया है।

कुछ लोग दूसरों को प्रिय लगते हैं क्योंकि वह बहुत ही दानी होते हैं। लेकिन कुछ लोग उनके उचित बर्ताव के कारण प्रियकर होते हैं। यहां विदुर धृतराष्ट्र को अपने पुत्रप्रेम के प्रति सचेत कर रहे हैं। धृतराष्ट्र अपने पुत्रों द्वारा किए गए अत्याचारों से परिचित है फिर भी एक राजा होने के नाते उसे पर कोई कार्यवाई नहीं ले सकते।

एक व्यक्ति जो दूसरों के प्रति ईर्ष्या रखता है वही एक मूर्ख एवं स्वार्थी माना जाएगा। जबकि वहीं एक बुद्धिमान एवं पंडित ही क्यों ना हो अपने प्रिय जनों द्वारा बुरे आचार करने पर भी वह उनको बुरा नहीं लगता जबकि जिस व्यक्ति से वही ईर्ष्या करता है उसके अच्छे कर्म भी वही बुरी नजर से देखा है विदुर यहां पर इस बात को व्यक्त करते हैं कि किसी के प्रति अधिक लगाव रखने से उनके द्वारा किए जाने वाले सही और बुरे कर्मों का हम उचित रूप से परख नहीं पाएंगे और विदुर यह भी कहते हैं कि उन्होंने एक बार दुर्योधन को त्याग करने के लिए कहा था जब उसका जन्म हुआ था। आगे विदुर यह भी कहते हैं कि मैं यह भी कहा था कि अगर दुर्योधन को त्याग देंगे तो आपके अन्य पुत्र उच्च पद को प्राप्त होंगे और अगर नहीं किया तो उसका अर्थ हो जाएगा अनुचित कार्यों को जानते ही उसके अंकुरित होने से पहले ही निकाल देना चाहिए धृतराष्ट्र उसके बचपन से ही उसके बुरे आचरणों को जानते थे लेकिन अपने पुत्र के प्रति अंता प्रेम रखने वाले धृतराष्ट्र उसके आचरणों के प्रति भी आंखें मूंदकर बैठकर मनुष्य को अपने और अन्य लोगों को भविष्य की चिंता करते हुए अगर कुछ त्यागना पड़े तो भी उसे वह करना चाहिए यही उचित है विदुर यह भी कहते हैं कि उच्च कुल में पैदा होने के बाद भी राजकीय

भोग विलास में जीने के बाद भी दुर्योधन अपने बुरे कर्मों के कारण नीचे है उसके जन्म के समय पर उसे त्याग नहीं त्याग नहीं गया लेकिन अब युद्ध को रोकने के लिए ऐसा करना ही उचित होगा।

विदुर की बातों को सुनकर धृतराष्ट्र बोलने लगे हे!विदुर तुमने जो भी कहा वह सत्य है कि जहां धर्म है वहां जय है तुम्हारे शब्द भविष्य के लिए लाभदाई साबित हो सकते हैं। लेकिन मुझ में इतनी हिम्मत नहीं है कि मैं अपने पुत्र का त्याग कर दूं। यहां धृतराष्ट्र के मन की स्थिति का पता चलता है। वे जानते हैं कि क्या सही है और क्या गलत फिर भी एक राजा होते हुए भी उसे गलती को सुधारने का प्रयास नहीं करते इसका कारण है उनके अपने बेटे के प्रति अंता प्रेम।

धृतराष्ट्र की बातें सुनकर विदुर उनकी योग्यता से दुखी हो जाते हैं कहते हैं इस संसार में सारे जीव जंतु एक दूसरे पर निर्भर है इसलिए एक छोटी सी गलती चाहे वह आती गुण संपन्न से ही क्यों ना हो जाए वह इस नीतीश नियति की तुलना को चकोर कर सकती है।

आगे श्लोक में विदुर विभिन्न तरह के लोगों के बारे में रहते हैं जो लोग दूसरों के बारे में अपवाद करते हैं दूसरों को छल कपट द्वारा दुख पहुंचाते हैं दूसरों के साथ लड़ाई करते हैं ऐसे लोग दूसरों के मन में भाई पैदा करते हैं ऐसे लोग उनके आसपास रहने वालों को भी दूषित कर देते हैं विदुर ने कितनी अच्छी बात कही है यह बातें आज के कलयुग में भी उतनी ही सुयोजित है जितनी उसे समय थी आज संसार कुछ ऐसे ही लोगों से भरा हुआ है स्वार्थी कलुषित एवं परापवाद करने वालों से इस स्थिति में शांति एवं खुशी की संभावना नहीं की जा सकती आगे विदुर ऐसे लोगों से बचने के लिए कहते हैं जो लोग पंडित हैं वैसे लोगों को पहचान लेते हैं और उनसे दूर रहने की कोशिश करते हैं क्योंकि ऐसे लोगों के लिए दोस्ती का भाव भी बस एक चल है। अपने स्वार्थ के लिए वह किसी से दोस्ती करते हैं और एक बार वह खत्म हो जाने पर उनके बारे में ही अपवाद प्रचलित करते हैं इसके विपरीत जो लोग दूसरों के प्रति सहानुभूति रखते हैं वह इस दुनिया में सब कुछ पाते हैं पांडव भी ऐसे ही दयावंत एवं दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने वाले हैं इसलिए उनका शुभ ही होगा।

इतना कहने के बाद भी धृतराष्ट्र अपनी मानसिक स्थिति से विचलित नहीं हुए विदुर ने प्रत्यक्ष रूप में ही दृढ़ राष्ट्र से अनुरोध किया कि आधा राज्य नहीं तो कुछ गांव ही पांडवों को दे दें ऐसा करने से उनके ऊपर कोई लांछन नहीं आएगा। दुर्योधन के अनुचित कार्यों को रोकना राजवंश की उन्नति के लिए अत्यावश्यक है आगे कहते हैं आप मेरे बड़े भाई है इसलिए आपको उचित मार्ग दिखाना मेरा कर्तव्य है आपके मन को मेरी बातें संतुष्ट करें या ना करें लेकिन बताना मेरा कर्तव्य है।

मृग को विष लगा हुआ बाण मारता है लेकिन हत्या का पाप तो उसे शिकारी पर ही आता है इस तरह हमारे संतान जो बुरे कर्म करते हैं उसका पाप पुण्य का फल हमें भुगतना पड़ता है अगर दुर्योधन द्वारा कुछ अनुचित पाप कर्म हो भी जाए तो उसको सुधारना राजवंश के वरिष्ठ व्यक्ति होने के नाते आपका कर्तव्य है।

विदुर की उक्त नीतियां धृतराष्ट्र को समझने के लिए कही गई है लेकिन इनका धृतराष्ट्र पर कोई असर नहीं हुआ और उसका नतीजा कुरुक्षेत्र युद्ध था आज भी इस तरह के कार्यों की कुछ कमी नहीं है नाइट रिश्तो को छोड़कर मनुष्य अधिक स्वार्थी बनता जा रहा है जिसका नतीजा है सामाजिक नैतिकता का ह्रास।

निष्कर्ष

विदुर नीति ग्रंथ में धृतराष्ट्रीय के प्रश्नों एवं विदुर की नीति उपदेशों द्वारा आधुनिक समाज को एक

उत्तम रास्ता दिखाने का प्रयास किया है। विदुर ने महाभारत युद्ध को टालने का प्रयत्न किया था लेकिन धृतराष्ट्रीय अपने बुद्धि शक्ति में इतना गिर चुके थे कि उनकी नीति पर उपदेशों का उन पर कोई असर नहीं हुआ आज की दुनिया भी इसी तरह अपनी बुद्धि से बहुत गिर चुका है किसी उपदेशों के द्वारा उनको सुधारना नामुमकिन सा हो गया है। इस अवस्था से बाहर आने के लिए हमारी आज की पॉइंट को नीतिपरक विषयों का उत्तम ज्ञान होना आवश्यक है।

सन्दर्भ

1. विदुरनीति: बी. एस. बिस्ट
2. भगवत गीता : उद्योग पर्व
3. Neṟicūṭi, Classic of Ethics
4. Nalvaḻi, Good path
5. Ulakanīti. Universal Law